Course - M.A , Education,Part -2
Paper-- 11th, Educational Administratibe Practice
Prepared by -- Dr Meena Kumari
Topic-- Principles and Nature of Educational Management

--------+----------+--------+----++--- ----------

शैक्षिक प्रबंधन के सिद्धांत तथा प्रकृति

(1)प्रस्तावना -- किसी भी संगठन को नियमानुसार एवं सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए उसका समुचित प्रबंधन आवश्यक है। प्रबंधन की विशेषता के आधार पर ही संगठन अपने वांछित उद्देश्यों की पूर्ति तथा समाज में अपना विशिष्ट स्थान कायम कर सकता है ।संगठन के उचित प्रबंधन से समस्त कार्य विधियां व्यवस्थित एवं सुगम तरीके से संपादित होते हैं ,इससे शिक्षा अथवा शिक्षण से जुड़े प्रशासक वर्ग, शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक सभी को संतुष्टि की प्राप्ति होती है ।अतः उद्देश्य प्राप्ति करने के लिए कुछ सिद्धांतों पर कार्य करना पड़ता है।

(2) शैक्षिक प्रबंधन के प्रमुख सिद्धांत

शैक्षिक संगठनों द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपलब्ध सभी मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की यथोचित तथा प्रभावी उपयोग ही शैक्षिक प्रबंधन के नाम से जाना जाता है। शैक्षिक संगठनों के सफल संचालन एवं क्रियान्वयन के लिए एक ठोस व्यवस्थित प्रबंधकीए दृष्टिकोण का व्यवस्था का होना अत्यंत आवश्यक है। एक प्रभावी शैक्षिक प्रबंधन के लिए निम्न सिद्धांतों पर कार्य करना चाहिए ---

१) नियोजन का सिद्धांत-- शैक्षिक प्रबंधन का पहला सिद्धांत यही है ।इसके द्वारा कार्य को किए जाने की योजना बनाई जाती है ।कार्य करने से पहले ,कार्य करने के बाद एवं क्रियान्वयन के दौरान तक नियोजन होना चाहिए!

२) समन्वय का सिद्धांत ,-- यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा से संबंधित विभिन्न पक्षों में समन्वय होना चाहिए ।इस संबंध में सामूहिकता एवं सामाजिकता को भी प्रमुखता दी जानी चाहिए!

३) सहयोग का सिद्धांत -- प्रबंधन की सफलता वहां पर कार्यरत मानवीय तत्व के बीच सहयोगात्मक रवैया पर निर्भर करता है। सभी कर्मचारियों में सहयोग की भावना का विकास करना जरूरी होता है।

४) केंद्रीकरण का सिद्धांत--इस सिद्धांत को बहुत अधिक प्रभावी नहीं माना जाता है क्योंकि इस व्यवस्था में सभी शक्ति कुछ लोगों के पास ही होता है। शैक्षिक उद्देश्यों के कुछ कुछ भागों को पूरा करने के लिए इस सिद्धांत का उपयोग होता है। जैसे सामान्य नीति से संबंधित मुख्य बातें एक स्थान पर होनी चाहिए।

५) आदेश की एकता का सिद्धांत -- इसके अंतर्गत कर्मचारियों को आदेश तथा निर्देशन एक निश्चित पदाधिकारी द्वारा ही देना चाहिए । आदेश की एकता के अभाव में कर्मचारियों के सामने यह समस्या हो जाती है कि किस आदेश को माने और किसको नहीं ।

६) पद सोपान का सिद्धांत-- शैक्षिक प्रबंधन के अंतर्गत पद सोपान का अर्थ होता है कि कर्मचारियों के बीच एक निश्चित क्रम होना चाहिए । कोई भी कर्मचारी इस क्रम की उपेक्षा ना करें । संप्रेषण तथा निर्देशन भी प्रभावी तरीके से किया जाता है। इस प्रकार से संगठन में एक व्यवस्था बना रहता है।

७) कार्य विभाजन का सिद्धांत -- शैक्षिक प्रबंधन में विभाजन का सिद्धांत भी होता है ।कार्यों का विभाजन वैज्ञानिक तरह से किया जाता है ताकि सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा उत्तरदायित्व की निश्चितता के साथ साथ प्रभावी तरीके से किया जा सके। प्रत्येक कर्मचारी तथा अधिकारी को अपने उत्तरदायित्व तथा कार्य का पूर्व में ही पता होना चाहिए।

८) निर्देशन का सिद्धांत-- संगठन में निर्देशन बहुत आवश्यक है ! निर्देशन के अभाव में उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावी तरीके से नहीं किया जा सकता है।

९) प्रेरणा का सिद्धांत- प्रत्येक कर्मचारियों में अधिकारियों द्वारा प्रेरणात्मक माहौल बनाना चाहिए ताकि सभी कर्मचारी एक अच्छे वातावरण में अच्छी तरह से लगन के साथ काम कर सके।

१०) सामूहिकता का सिद्धांत -- कर्मचारियों के बीच में समूह का भावना होना चाहिए। वह संगठन के उद्देश्य को मिलजुल कर तथा समूह के रूप में हासिल करें।

११) मानवीय आधार का सिद्धांत -- कार्य का विभाजन करते समय तथा उत्तरदायित्व को सौंपते समय प्रबंधक को संगठन में कार्यरत मानवीय तत्वों की आवश्यकता, रुचि, क्षमता तथा बुद्धि स्तर पर ध्यान रखना चाहिए। इससे सभी मानवीय तत्व रूचिपूर्ण तरीके से कार्य में भाग लेते हैं और संगठन का वातावरण स्वस्थ एवं सद्भावना पूर्ण बना रहता है।

१२) विचार विनिमय का सिद्धांत -- संगठन में किसी भी नीति ,योजना तथा नियम का निर्माण सभी मानवीय तत्वों के मध्य विचार विमर्श के फल स्वरुप होना चाहिए ।इससे प्रबंधक सभी व्यक्तियों के विचारों से अवगत होकर उन विसंगतियों को दूर कर सकता है जिनके द्वारा भविष्य में कार्य को संपन्न करने में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न हो सकती है।

१३) लचीलापन का सिद्धांत -- इस सिद्धांत के अनुसार प्रबंधकों किसी एक ही नियम पर अटल नहीं होना चाहिए बल्कि समय की आवश्यकता अनुसार नियमों एवं नीतियों में लचीलापन होना चाहिए। जिससे उद्देश्यों को प्रभावी तरीके से हासिल किया जा सके!

१४) स्वशासन के अवसर का सिद्धांत -- इस सिद्धांत के अनुसार प्रबंधक को संस्था में कार्यरत सभी व्यक्तियों को प्रबंधन का अवसर देना चाहिए। इसके लिए अलग-अलग समूह का निर्माण कर प्रत्येक समूह का एक अध्यक्ष या प्रभारी बनाना चाहिए और उसे उस कार्य को पूरा करने का उत्तरदायित्व सौंप देना चाहिए ।इससे कर्मचारियों में नेतृत्व के गुणों का विकास होता है।

१५) पारिश्रमिक का सिद्धांत --शैक्षिक प्रबंधन के सिद्धांत उचित पारिश्रमिक का सिद्धांत भी है। पारिश्रमिक से तात्पर्य केवल वेतन से ही नहीं बल्कि वेतन के अलावा समय-समय पर प्रशंसा ,पुरस्कार आदि भी देना चाहिए जिससे कर्मचारी वर्ग में रूचि एवं क्षमता से कार्य करने की प्रेरणा मिल सके।

१६)रचनात्मक दृष्टिकोण का सिद्धांत --इस सिद्धांत के अनुसार संगठन में नीतियों का निर्माण करते समय से निर्णय लेने चाहिए जो सभी व्यक्तियों का रचनात्मक चिंतन का अवसर प्रदान करें और जिससे संगठन की उन्नति की ओर अग्रसर हो!

१७)समान व्यवहार का सिद्धांत -- संगठन में प्रबंधकों को सभी व्यक्ति के साथ एक ही प्रकार का व्यवहार करना चाहिए और सभी के प्रति उसका दृष्टिकोण घनात्मक होना चाहिए।

(3) शैक्षिक प्रबंधन की प्रकृति

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानवीय तथा भौतिक संसाधन की उपयोगिता हीं शैक्षिक प्रबंधन है।शैक्षिक प्रक्रियाओं के प्रभाव देखने से पता चलता है कि इसकी निमनवत प्रकृति है :--
१) विज्ञान के रूप में -- प्रबंधन की प्रकृति के रुप में विज्ञान की दृष्टि से देखा जाता है तो इस संबंध में विचार यह है कि यह प्राकृतिक विज्ञानों की तरह शुद्ध विज्ञान है लेकिन दूसरी मत यह है कि यह एक व्यवहारिक विज्ञान है।
२) कला के रूप में -- प्रबंधन के अंतर्गत मानवीय मूल्यों तथा संबंधों पर भी ध्यान दिया जाता है। अतः इसका स्वरूप कला भी है।
३) अर्जित एवं जन्मजात योग्यता के रूप में -- शैक्षिक प्रबंधन की प्रकृति के संदर्भ में अर्जित एवं जन्मजात योग्यता का विचार दोनों माना जाता है ।कुछ विद्वान यह मानते हैं की शैक्षिक प्रबंधन एक अर्जित योग्यता है तथा दूसरा मत यह है कि प्रशिक्षण के द्वारा एक सफल प्रबंधक बनाया जा सकता है

४)प्रक्रिया के रूप में -- कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रबंधन एक प्रक्रिया है जो शैक्षिक उपक्रम की क्रियाओं के प्रभावी नियोजन और नियमन में निहित होता है!

५) व्यवसाय के रूप में:- शैक्षिक प्रबंधन में भी अन्य व्यवसायों की तरह एक व्यवसाय के रूप में देखा जाता है ।यद्यपि सैद्धांतिक रूप में आज भी हमारे देश में शिक्षण कार्य एक सेवा के रूप में माना जाता है लेकिन व्यवहारिक दृष्टिकोण में व्यवसायिक क्षमता का भी होना आवश्यक है!
६) सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में -:-- शैक्षिक प्रबंधन ,अन्य प्रबंधन की तरह सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में भी है अर्थात इसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना के अनुसार कार्य किया जाता है ।शैक्षिक प्रबंध में प्रबंधक शिक्षा से संबंधित सभी पक्षों के प्रति उत्तरदायित्व होता है अर्थात विद्यार्थी, अभिभावक, समाज सभी के प्रति उत्तरदायित्व होता है।